अलंकार

जनक - भामह

प्रकार

शब्दालंकार

- ☆ अनुप्रास
- ☆ यमक
- ☆ श्लेष
- ☆ वक्रोक्ति
- ☆ वीप्सा
- ☆ पुनरुक्ति प्रकाश
- ☆ पुनरुक्तिवदाभास (पुनरुक्ति का आभास)

अर्थालंकार / भावप्रधान अलंकार

उपमेय & उपमान का सम्बन्ध

- ☆ उपमा ↔ प्रतीप (विपरीत)
- ☆ रूपक + उपमेयोपमा
- ☆ प्रतीप
- ☆ उपमेयोपमा
- ☆ अपह्नुति
- ☆ अनन्वय
- ☆ उत्प्रेक्षा
- ☆ दीपक
- ☆ व्यतिरेक
- ☆ संदेह
- ☆ भ्रान्तिमान
- ☆ अतिशयोक्ति

कारण & कार्य का सम्बन्ध

- ☆ विभावना
- ☆ विशेषोक्ति
- ☆ अन्योक्ति
- ☆ समासोक्ति
- ☆ व्याजोक्ति
- ☆ अर्थान्तरन्यास
- ☆ उल्लेख
- ☆ यथासंख्या

शब्दालंकार

अनुप्रास

अर्थ - आवृत्ति / बार-बार आना

↓

किसी वर्ण या शब्द की पुनरावृत्ति

जैसे - ☆ चारु चन्द्र की चंचल किरणें.....
☆ तरनि तनुजा तट तमाल.......
} वृत्यानुप्रास

प्रकार -
1. छेकानुप्रास विजाई राहुल यादव
2. वृत्यनुप्रास = मुख्य अनुप्रास
3. अन्त्यानुप्रास
4. लाटानुप्रास
5. श्रुत्यानुप्रास

1 छेकानुप्रास

- छेका - रोका
↓
- किसी वर्ण की केवल एक बार आवृत्ति होना
↓
- आवृत्ति का क्रम एक समान होना
↓
- वर्णों की संख्या दो से अधिक नहीं।

★ पहचान - पुनरुक्ति शब्दों का प्रयोग
जैसे - ★ चल चल, रोते रोते, हस्ते - हस्ते
★ रीझि - रीझि, हँसि - हँसि उठैं।
★ उदित उदय

2 वृत्यानुप्रास

★ मूल अनुप्रास अलंकार
वर्णों की आवृत्ति - कई बार / एक से अधिक बार
वर्णों का स्वरूप & क्रम - किसी भी स्वरूप & क्रम से
वर्णों की संख्या = 2+ विजाई राहुल यादव
जैसे - तरनि तनुजा ......
चारु चंद्र ......
शेष महेश, गणेश, सुरेश ......
खडगसिंह के खड़कने से .....
पके पेड़ पर पका पपीता .....
समझ समझ के समझ को समझो ....

3 अन्त्यानुप्रास

- अन्त्या + अनुप्रास
↓ ↓
अन्त में आवृत्ति
(पद / वाक्य)
- किसी पद या वाक्य के अंत में स्वर & व्यंजन की समानता / अन्त में आवृत्ति / तुकबंदी / लयबद्धता होना
जैसे - जय हनुमान ज्ञान गुन सागर।
जय कपीश तिहु लोक उजागर।।
2। ....धामा।
....................नामा।।
....................बजरंगी।
....................संगी।।

4. लाटानुप्रास

लाट : अर्थ - एक समूह में होना

- किसी शब्द या वाक्य की उसी अर्थ में आवृति होती है।

शब्द	वाक्य
↓	↓
शब्द	वाक्य

) समान अर्थ लेकिन अन्वय / शब्दप्रकार अलग हो

जैसे - * पूत कपूत तो का धन सॉचे।
पूत सपूत तो का धन सॉचे॥

* गुरू तेजबहादुर ही थे, गुरु पदवी के पात्र समर्थ।
गुरू तेजबहादुर ही थे, गुरु पदवी थी जिनके अर्थ॥

* वही मनुष्य है, जो मनुष्य के लिए मरे

5. श्रुत्यानुप्रास

किसी एक ही उच्चारण स्थान से निकलने वाली ध्वनियों या वर्णों की आवृति, जैसे - मुर्धन्य स्थान - ट वर्ग, ऋ, ष ध्वनियों की आवृति।

जैसे - तुलसीदास सीदति निसिदिन।
देखत तुम्हार निठुराई॥ बिजार्ड राहुल यादव
(दंत्य वर्ग - त, थ, द, ध, न, स)

श्लेष अलंकार

अर्थ - शब्द एक, अर्थ अनेक (अलग - अलग दृष्टिकोण के आधार पर)

जैसे - सुबरन को खोजत फिरत।
कवि व्यभिचारी चोर॥
कवि - अच्छे शब्द
व्यभिचारी - रूप रंग
चोर - सोना

मंगन को देख पट देत बार-बार है।
↓ ↓
भिखारी वस्त्र / दरवाजा

जो रहीम गति दीप की।
कुल कपूत गति सोय।
बारे उजियारे लगें, बढ़ै अंधेरो होय॥

दीप - जलना
बाढ़ै - बुझना (दीप)
कपूत - बचपन
बारे - युवावस्था / बड़ा होना

यमक अलंकार

जितने शब्द उतने अर्थ

↓

जितनी बार शब्द, उतनी बार नए अर्थ

जैसे - कनक - कनक ते सौ गुनी - - - -

(सोना) (धतूरा)

★ तीन बेर खाती थी वे तीन बेर खाती हैं

(फल) (समय)

★ काली घटा का घमण्ड घटा

(बादल) (कम होना)

★ सूर - सूर तुलसी शशि ।

(सूरदास) (सूर्य)

★ कबिरा सोई पीर है, जो जाने सो पीर ।

(संत/पैगम्बर) (पीड़ा)

पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार

काव्य के सौन्दर्य को बढ़ाने के लिए (किसी शब्द या वर्ण की बार-बार आवृति)

↓

विजार्ड राहुल यादव

वाक्य के अर्थ मे परिवर्तन न होकर उसके सौन्दर्य में वृद्धि होती है।

जैसे- सखी निरख नदी की धारा ।
ढलमल ढलमल चंचल चंचल ।।
झलमल - झलमल तारा ।।

- हौले हौले हवा चलती है।
- ठौर ठौर विहार करती सुन्दरी ।

पुनरुक्तिवदाभास

किसी शब्द की पुनरुक्ति का आभास हो, लेकिन पुनरुक्ति का अभाव होता है।

जैसे- पुनि फिरि राम निकट सो आई

पुनः लौटना

वक्रोक्ति अलंकार

- वक्र + उक्ति

टेढ़ी उक्ति

जैसे - कौन हो तुम ?
घनश्याम हैं हम ।
तो कहीं बरसो जाए....।

★ एक कबूतर देख हाथ में पूछा कहाँ अपर है ?
उसने कहा अपर कैसा ? वह उड़ गया सपर है।।

अपर - दूसरा
- परहीन

★ रोको, मत जाने दो ।
रोको मत, जाने दो ।

वीप्सा अलंकार

अर्थ - दोहराव । बार बार आना   विजार्ड राहुल यादव

- हर्ष, उत्साह, शोक, घृणा जैसे मनोभावों को व्यक्त करने वाले शब्दो (विशेषत: विस्मयादिबोधक शब्द) का बार-बार प्रयोग

जैसे - 1. आह ! वह मुख पश्चिम के व्योम
2. अरे अरे ! दूर हटो
3. छि: छि: दूर हटो
4. हाय - हाय मैं मर गया ।

केवल गहराई से क्या होता है
गहरा तो कूप भी होता है।।

↓

दृष्टान्त अलंकार

अर्थालंकार

(A) करण-कार्य का सम्बन्ध

विभावना ← (विपरीत) → **विशेषोक्ति**

विभावना

कारण - ×
कार्य - ✓

★ बिना कारण के कार्य की प्रधानता — बिजार्ड राहुल यादव
★ इसमे बिना किसी मेहनत के ही फल मिल जाता है।

जैसे- बिनुपद चले, सुनैं बिन काना (तुलसीदास)

चरण कमल बंदौं हरि राई।
(रूपक)
जाकी कृपा पंगु गिरि लांघै,
अंधे को सब कुछ दरसाई। (सूरदास)

विशेषोक्ति

कारण - ✓
कार्य - ×

★ कारण तो बहुत हैं, लेकिन कोई कार्य नही होता।
★ इसमे खाना तो बहुत है लेकिन भूख ही नही जाती है।

जैसे- 1. देखो दो दो मेघ बरसते,
मैं प्यासी की प्यासी। (महादेवी)

2. पानी मे मीन प्यासी,
मोहे सुनि सुनि आवे हांसी। (कबीर)

3. धन रहने पर भी गर्व नहीं,
चंचलता नही जवानी में
जिसने देखी उसकी महानता,
वही पड़ा है रानी में।

अलंकार

अन्योक्ति | **समासोक्ति**

अन्योक्ति

अन्य + उक्ति
↓ ↓
अप्रस्तुत (Indirect) — कथन (Plan)

★ अप्रस्तुत माध्यम से प्रस्तुत व्यक्ति/वस्तु की सिद्ध करना/समझाना।
↓
अप्रस्तुत से प्रस्तुत की ओर
(Indirect से Direct)

पहचान :- किसी बच्चे को (जो वहां पर नहीं) उसे बलि का बकरा बनाकर अपने बच्चे को समझाना।

समासोक्ति

★ प्रस्तुत माध्यम/कथन/उक्ति से अप्रस्तुत कथन को सिद्ध करना।

★ प्रस्तुत से अप्रस्तुत की ओर।
(Direct से Indirect)

पहचान :- जैसे किसी बच्चे को टीचर दण्ड दे रहे हो और अपने बच्चे को भी बोला जाए कि आप भी ऐसा करते हो, मान जाओ नही तो ऐसा आपके साथ भी होगा।

अलंकार	विशेषता . पहचान	उदाहरण
अर्थालंकार	उपमेय & उपमान का सम्बन्ध	चरण - कमल बंदौं हरिराई।
रूपक	रूपक का अर्थ है एक होना या आपस में मिलना उपमेय और उपमान एक हो जाते हैं। या उपमेय और उपमान के बीच अभेद /भेद रहित आरोप होना । पहचान- योजक चिन्ह (-)	मुख - चन्द्र चन्द्र मुखी सूर्य मुखी मैया मैं चंद्र खिलौना लैहौं'। बीती विभावरी जाग री। अंबर-पनघट पर डुबो रही तारा -घट ऊषा-नागरी (प्रसाद)
अपन्हुति अलंकार	रूपक का नकारात्मक स्वरूप उपमेय और उपमान के बीच नकारात्मक सम्बन्ध /आरोप (तुलना) पहचान - नही / ना का प्रयोग	यह चरण नही कमल है। यह मुख नही चाँद है। विजाई शहुल यादव
उपमा अलंकार	★ उपमेय & उपमान के बीच भेद/अंतर (Gap) ★ दोनो रूपक के समान एक नही होते (अभेद) ★ उपमेय & उपमान की उपयोगिता अधिक होती है। पहचान :- तुलना सूचक शब्द (वाचक शब्द) का प्रयोग - जैसे - As, सम, समान, तरह, जैसे, सो, सा, सी, सरिस, भाँति उपमा के चार अंग हैं - 1. उपमेय 2. उपमान ⌒ विशेषता 3. साधारण धर्म 4. वाचक उपमा के प्रकार - 4 1. पूर्णोपमा - चारो अंगो का होना (उपमेय + उपमान + सा० धर्म + वाचक) 2. लुप्तोपमा - । सा० धर्म का न होना । 3. मालोपमा या सांग उपमा → (कई) एक साथ कई उपमाओं का प्रयोग	★ चरण कमल के समान सुन्दर या कमल से चरण ★ चाँद सा मुख ★ हरिपद कोमल कमल से उपमेय - हरिपद उपमान - कमल साधारण धर्म - कोमल वाचक - से } पूर्णोपमा अलंकार ★ चाँद सा सुन्दर चेहरा (उपमेय, वाचक, सा० धर्म, उपमान) → फूलों सा चेहरा तेरा ★ चाँद सा चेहरा ★ अंजन सा अँधेरा चन्द्रमा सा कांतिमय & कमल सा कोमल कुसुम सा हँसता हुआ मेरी प्राणेश्वरी का चेहरा

	५·उपमेयोपमा- उपमा + प्रतीप	
प्रतीप अलंकार	उपमा का विपरीत · ★ प्रसिद्ध उपमान (जैसे कमल, चाँद, सचिन, बिग-बी) का महत्व को कम करना उपमेय: उपयोगिता ↑ उपमान: उपयोगिता ↓ उपमान की तुलना में उपमेय को अधिक महत्व देना।	कमल चरण के समान सुन्दर है। ★ कमल से चरण (उपमा)] चरण से कमल (प्रतीप)] उपमेयोपमा चाँद सा मुख (उपमा)] मुख सा चाँद (प्रतीप)] उपमेयोपमा
उपमेयोपमा अलंकार	उपमा + प्रतीप = उपमेयोपमा उपमेय और उपमेय का स्थान परिवर्तन / आपस में बदल जाते हैं उपमेय (सा) उपमान (चाँद) → मुख मुख ← चाँद (उपमेय) (उपमान)	(उपमा) राम के समान शम्भू हैं। शम्भू के समान राम हैं। (प्रतीप)
अनन्वय अलंकार (No way) कोई विकल्प नही	★ उपमेय को ही उपमान मान लिया जाता है। ↓ ★ उपमान का अभाव होता है। ↓ ★ उपमेय = उपमान ★ उसी वस्तु या व्यक्ति की तुलना पुन: उसी वस्तु या व्यक्ति से करना खिलाड़ी राहुल यादव (राहुल) (राहुल) से/सा एक समान	चरण से चरण मुख सा मुख आप से आप (उपमेय) (उपमान) राम से राम. सिया सी सिया। भारत के सम भारत हैं।
उत्प्रेक्षा अलंकार (अनुमान/संभावना वाचक अलंकार)	इस अलंकार में अनुमान या संभावना प्रकट की जाती है। उपमेय और उपमान के बीच संभावना/अनुमान का प्रयोग पहचान - जानो, मानो, ऐसा लगता है। ब्रज व अवधी के शब्द: जनु मनु / जनी मनो / जनहुँ मनहुँ	चरण मानो कमल हैं। मुख जानो चाँद हैं। ★ तरनि तनुजा तट तमाल तरुवर बहु छाये। झुके कूल सों जल परसन हित मनहुँ सुहाये।। ★ सोहत ओढ़े पीत पट श्याम सलोने गात। मनहुँ नीलमनि सैल पर, आतप परयो प्रभात।

पहचान :- जितने भी नीति / उपदेश प्रधान पद (दोहे) है - रहीम, कबीर

जैसे :- 1. या / जो रहीम उत्तम प्रकृति, } सामान्य कथन
का करि सकत कुसंग। } सिद्ध
चंदन विष व्यापत नहीं, }
लिपटे रहत भुजंग। } विशेष कथन

2. बड़े हुए तो क्या हुए, जैसे पेड़ खजूर

3. धीरे-धीरे रे मना, धीरे सबकुछ होय।।

(B) उपमेय - उपमान का सम्बन्ध / प्रस्तुत & अप्रस्तुत का सम्बन्ध ⇒

उपमेय / प्रस्तुत → जिसकी विशेषता / तुलना की जाए

उपमान / अप्रस्तुत → जिससे की जाए

जैसे - चरण - कमल
(उपमेय) (उपमान)
मुख चंद

रूपक ⇒

अर्थ :- आपस में मिलाना / जोड़ना / एक करना।

उपमेय & उपमान को आपस में मिलाना / एक करना।

परिभाषा - उपमेय और उपमान के बीच अभेद / भेद रहित आरोप (तुलना)

पहचान - योजक चिन्ह (-) का प्रयोग विजाई राहुल यादव

जैसे - 1. चरण-कमल बंदौं हरि राई।
2. मैया मैं चंद्र खिलौना लैहौं।
3. सन्ध्या - सुन्दरी
4. सूर्यमुखी, ज्वालामुखी, चन्द्रमुखी
5. बीती विभावरी जागरी।
अंबर - पनघट पर डुबो रही ;
तारा - घट, ऊषा - नागरी (प्रसाद)
(सांग रूपक अलंकार)
कैई

	उत्प्रेक्षा के प्रकार → 3 1. वस्तूत्प्रेक्षा वस्तु + उत्प्रेक्षा (संभावना) एक वस्तु में दूसरी वस्तु की संभावना मूल उत्प्रेक्षा वस्तूत्प्रेक्षा अलंकार होता है।	मुख मानो चाँद
	2. हेतूत्प्रेक्षा ↴ हेतु = कारण अवास्तविक कारण को वास्तविक मान लेना। संभावना व्यक्त करना।	→ पिय से कहऊ संदेसणा। हे भौंरा, हे काग। सो धनि बिरही जरि मुई तेहिक धुआँ हम लाग।
	3. फलोत्प्रेक्षा ↴ अवास्तविक फल या परिणाम को वास्तविक मान लेना।	★ अच्छा और स्लिम दिखने के लिए वह रोज साइकिल चलाकर पेपर बाँटता है। ★ नायिका के चरणों की समानता पाने के लिए कमल जल में तपस्या। तप कर रहा है।
दीपक अलंकार	दीपक का अर्थ- समान धर्म या लक्षण या एक जैसी विशेषताएँ। प्रकाशित होना। ★ उपमेय और उपमान में कोई तुलना नहीं होती है। ★ दोनों एक समान धर्म। विशेषता को प्रस्तुत करते हैं। विजाई राहुल यादव	★ मेरे दो अनमोल रत्न हैं, एक है राम तो दूसरा लखन है। ★ चरण और कमल दोनों सुंदर और सुशोभित है। ★ मुख और चाँद दोनों कांतिमान व प्रकाशवान है।
दृष्टान्त अलंकार	★ उपमेय व उपमान के बीच बिम्ब और प्रतिबिम्ब का सम्बन्ध ★ प्रकृति - एक बिम्ब / माध्यम के रूप में ↓ संदेश - एक प्रतिबिम्ब के रूप में	★ दुख की रजनी बीच, विकसता सुख का नवल प्रभात। (प्रसाद) रात - दिन - बिम्ब दुःख - सुख - प्रतिबिम्ब ★ दुख सुख के मधुर मिलन से ये जीवन है परिपूर्ण (प्रतिबिम्ब) जैसे- घन में ओझल हो शशि, शशि में ओझल हो घन (बिम्ब)

		* प्रकृति के यौवन का श्रृंगार, कभी न करेंगे बासी फूल। (बिम्ब) ↓ संदेश - परिवर्तन प्रकृति का नियम है।
व्यतिरेक अलंकार	उपमान की तुलना में उपमेय को अधिक महत्व देना उपमेय : महत्व ↑ (गुण बताकर) उपमान : महत्व ↓ (दोष बताकर)	उसका मुख निष्कलंक है, चाँद तो सकलंक है।
संदेह अलंकार	उपमेय और उपमान में अधिक समानता होने के कारण एक अनिर्णय की स्थिति होती है कि यह वही वस्तु है या कोई और पहचान - या, अथवा का प्रयोग	* चरण है या कमल है। * मुख है या चाँद है। (वस्तु से दूरी) * नारी बीच सारी है, या सारी बीच नारी है।
भ्रान्तिमान अलंकार	अधिक समानता होने के कारण ↓ उपमेय व उपमान में भ्रम का बोध होना ↓ एक निर्णय की स्थिति (वस्तु से नजदीक) ↓ पहचान - प्राय: ही का प्रयोग	* पाँय (पैर) महावर देन को, नाईन बैठी आय। फिरि फिरि जानि महावरी एड़ी मीडति (मोड़ना) जाय।। * बिल विचारि प्रविहन (अचानक) लागा सूड़ में ठ्वाल (सांप)। ताहूकरी (उसी प्रकार) ईख भ्रम गज उठाय लियो उन्ताल (तुरन्त) * वृन्दावन विरहत फिरैं, राधानंद किशोर। नीरद (बादल) दामिनी जानि, संग डोलें बोलें मो

उदा:- नहि पराग नहि मधुर मधु नहि, विकास यहि काल।
अली कली ही सों बंध्यों (भौंरा) (आकर्षित)
आगे कौन हवाल।
अप्रस्तुत - भौंरा(अली) → राजा (प्रस्तुत)
फूल (कली) → रानी

उदा:- आह! वह मुख पश्चिम के व्योम
बीच जब घिरते हो घनश्याम।
अरुण रविमण्डल उनको भेद
दिखायी देती हैं छविधाम
(प्रसाद-कामायनी)
प्रस्तुत - आकाश, सूर्य, बादल
अप्रस्तुत - श्रद्धा का मुख (नायिका)

असंगति अलंकार

★ कारण और कार्य में कोई तालमेल।
संगति न होना अर्थात बेमेल होना।
↓
★ करे कोई & भरे कोई   विनाई राहुल यादव

जैसे- 1. दृग उरझत, टूटत कुटुम्ब (बिहारी)
2. गंध मैंने पी, मदहोश कोई और हुआ।
चोट मुझको लगी, बेहोश कोई और हुआ।
3. तुमने पैरों में लगाई मेंहदी
मेरी आँखों में समाई मेंहदी।

व्याजोक्ति अलंकार

★ व्याज + उक्ति
(बहाना बनाना)

★ किसी मूल (मुख्य) कारण को छिपाकर। उसके स्थान पर किसी दूसरे कारण को प्रस्तुत करना।

जैसे- चलन चलन सुनि पलन में,
(पलकें)
आंसू छलके आय।
कोई देखे न सखी,
झूठे ही जमुहाय।।

अर्थान्तरन्यास अलंकार

निगमन शैली (प्लेटो) [सामान्य उक्ति। कथन से विशेष कथन को
या विशेष उक्ति के माध्यम से
सामान्य उक्ति को सिद्ध करना]

आगमन शैली : अरस्तू

अलंकार : एक दृष्टि में (पहचान)

अर्थालंकार (उपमेय और उपमान का सम्बन्ध)

रूपक	उपमेय मे उपमान का आरोप (निषेधरहित)	चरण-कमल
अपह्नुति	उपमेय में उपमान का आरोप (निषेधसहित)	चरण नही कमल
उपमा	उपमेय & उपमान में (भेद सहित आरोप)	कमल से चरण
प्रतीप	उपमा का विपरीत	चरण से कमल
उपमेयोपमा	उपमेय ⟶ उपमान, उपमेय ⟵ उपमान	कमल से चरण (उपमा), चरण से कमल (प्रतीप)
अनन्वय	उपमेय = उपमान (सेम)	चरण से चरण
दीपक	उपमेय & उपमान (समान गुण)	चरण & कमल दोनो सुन्दर शोभित है।
दृष्टान्त	बिम्ब & प्रतिबिम्ब	

अर्थालंकार (कारण & कार्य का सम्बन्ध)

विभावना	कारण-x, कार्य-✓	डिजाईन राहुल यादव
विशेषोक्ति	कारण-✓, कार्य-x	
अन्योक्ति	अप्रस्तुत से प्रस्तुत की ओर	
समासोक्ति	प्रस्तुत से अप्रस्तुत की ओर	
व्याजोक्ति	मूल कारण को छिपाकर दूसरे कारण को प्रस्तुत करना	
असंगति	कारण & कार्य में कोई मेल नही	
अर्थान्तरन्यास	सामान्य से विशेष या विशेष से सामान्य	

शब्दालंकार

अनुप्रास - ऐका - एका ।-। (2 संख्या)
(आवृत्ति) (वर्ण)(आवृत्ति)

वृत्या - वर्ण वृत्त /वाक्य

अन्त्या - अंत में तुकबंदी (लय)

लाटा - (समूह) · शब्द → शब्द, वाक्य → वाक्य } समान अर्थ

श्रुत्या - एक ही उच्चारण स्थान की ध्वनियां /वर्ण

विजार्ड राहुल यादव

श्लेष - शब्द एक। अर्थ अनेक

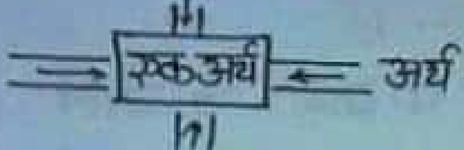

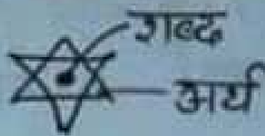

यमक - जितने शब्द, उतने अर्थ

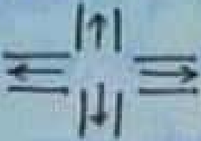

वक्रोक्ति - zigzag उक्ति (टेढ़ी

वीप्सा - शब्दों का दोहराव

पुनरुक्तिप्रकाश - पुनरुक्ति शब्दों का प्रयोग

पुनरुक्तिवदाभास - पुनरुक्ति का आभास